I.A.S.E. Bilaspur

1. Name of the sm contributor – Dr. Mahalaxmi singh

2. Class and subject - B.ed. 2nd year pedagogy in hindi .

3. Unit - 1st

4. Topic . हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्य , भाषा कौशल

5. Objective . हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्य , भाषा कौशल को जानना

6. Cotente . हिन्दी भाषा शिक्षण

7. Point Of Evaluation -

भाषा परिचय – जिस प्रकार पृथ्वी पर मानव के लिये प्राण वायु की अति आवश्यकता है , उसी प्रकार बोलना भी आवश्यक है।

एडवर्ड सापिर के अनुसार – चलना स्वयं में एक मूल प्रबृति होती है तथा यह एक कायिक क्रिया है, नैसर्गिक एवं स्वाभाविक कार्य भी है , जबकि बोलना एक नैसर्गिक प्रवृति रहित ,

भाषा का अर्थ – अपने भावों ,विचारों ,इच्छाओं तथा सूचनाओं को दूसरों के समक्ष व्यक्त करने के साधन या माध्यम को भाषा कहा जाता है। कोई भी भाषा मौखिक शब्द समूह या वाक्यों की वह व्यवस्था है , जिसके माध्यम से दो या अधिक व्यक्ति परस्पर विचारों का आदान प्रदान या विनिमय करते हैं । इस प्रकार विचार विनिमय की श्रृंखला में अपनी माता की गोद में जन्म लेकर बढ़ने व विकास करने वाला बालक जब अपनी मॉ का अनुकरण करके अपनी माता के सामान ही भाषा बोलने लगता है। तब वह भाषा प्रथम श्रेणी की भाषा कहलाती है।

भाषा ही मानव को सामाज में प्रतिष्ठित करती है और भाषा ही हमें इस योग्य बनाती है कि अपने जीवन के सुख – दुख , हर्ष – विमर्ष , भय – क्रोध आदि भावों को दूसरे के समक्ष प्रस्तुत करने में सक्षम हो सकते है। भाषा केवल हमारे विचारों की संवाहिका नहीं है बल्कि हमारी प्राचीन सभ्यता संस्कृति कला कौशल की परिचायिका भी है। अनेक विषयों पर लिखित पुस्तकों का प्रकाशन भाषा के द्वारा ही सम्भव है। उपयुक्त विचारों को दृष्टिगत रखते हुए यह कह सकते हैं कि भाषा के उच्चरित रूप की तुलना में उसका लिखित रूप अधिक महत्वपूर्ण है। वाणी की तुलना में लेखनी अधिक महत्व रखती है।

लिखित अक्षरों के अभाव में हम यह कह सकते हैं, कि समूचा विश्व अज्ञानावरण में आवृत् है। यहॉ समग्र रूप में यही कहा जा सकता है कि भाषा के पठन पाठन ने हमारा मूल प्रयोजन अपने मनोविकारों को व्यक्त करने में सक्षम होना तथा दूसरों द्वारा अभिव्यक्त की गई बातों को समझ सकने योग्य होना है।

भाषा की परिभाषा – जिस वार्तालाप या लेख के माध्यम से हम अपने विचारों को प्रकट करते हैं , वही भाषा है, भाषा के दो रूप है उच्चरित और लिखित।

1. सुमित्रानन्दन पंत के अनुसार – '' भाषा संसार का नादमय चित्र है, ध्वनिमय स्वरयंत्र है , यह विश्व की

हृदयतन्त्री की झंकार है , जिसके स्वर में अभिव्यक्ति होती है।

2. काव्यादर्श के अनुसार – यदि शब्द रूपी ज्योति से यह संसार प्रदीप्त न होता तब यह समस्त संसार अंधकारमय हो जाता।

3. स्वीट के अनुसार – ध्वन्यात्मक शब्दों के द्वारा विचारों की अभिव्यक्ति ही भाषा है।

हिन्दी भाषा शिक्षण – हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्य व भाषा कौशल

हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों का वर्गीकरण –

ज्ञानात्मक उद्देश्य	कौशलात्मक उद्देश्य	अभिरूची परक उद्देश्य	अर्थग्रहण उद्देश्य	सद्वृत्ति परक उद्देश्य	सृजनात्मक उद्देश्य

(1)ज्ञानात्मक उद्देश्य –

1- भाषा तत्वों का ज्ञान प्राप्त करना।

2- विषय वस्तु का ज्ञान प्राप्त करना।

3- साहित्य की विभिन्न विधाओ. का ज्ञान प्राप्त करना।

4- हिन्दी साहित्य की जानकारी संबंधी ज्ञान प्राप्त करना।

5- रचनात्मक कार्यो के विभिन्न रूपों का ज्ञान प्राप्त करना।

6- रचना के रूपों का ज्ञान – मौखिक/लिखित – पत्र लेखन , वाद विवाद , अन्ताक्षरी , आत्मकथा , सारांश , वार्तालाप ,बालगीत इत्यादि का ज्ञान प्राप्त करना।

(2) कौशलात्मक उद्देश्य –

1- अभिव्यक्ति क्षमता कर विकास (मौखिक)।

2- लिखित अभिव्यक्ति की योग्यता का विकास।

3- शुद्ध वाचन करने की योग्यता का विकास।

4- गद्य या पद्य को पढ़ कर अर्थ ग्रहण की क्षमता का विकास।

5- दूसरों के द्वारा बतायी गई एवं पठित सामाग्री पढ़कर सुनकर अर्थग्रहण करने का विकास।

(3) अभिरूचि परक उद्देश्य –

1- साहित्य का रसास्वादन – पुस्तकालय , वाचनालय , पत्र पत्रिका , रेडियों , टेलीवीजन के माध्यम से आनन्द की अनुभूति प्राप्त करना ।

2- साहित्य के सामान्य विचारों की समालोचना करना।

(4) अर्थग्रहण उद्देश्य –

1- साहित्य को पढ़ कर अर्थग्रहण करने की क्षमता का विकास करना।

2- साहित्य को सुनकर अर्थग्रहण कर सकने की क्षमता का विकास करना।

(5) सद्वृत्ति परक उद्देश्य –

1- साहित्य के माध्यम से श्रद्धा एवं आस्था का विकास करना।

2- साहित्य पढ़कर सुनकर प्रेम सहिष्णुता का विकास करना।

3- साहित्य से संवेदनशीलता का विकास करना।

4- साहित्य के माध्यम से सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन का विकास।

(6) सृजनात्मक उद्देश्य –

1- मौलिकता का विकास।

2- सोचने , विचारने , मनन करने , की क्षमता का विकास।

3- अनुभूतियों को व्यवस्थित करके मौखिक या लिखित अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास।

पूर्व माध्यमिक स्तर पर हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्य –

1- व्याकरण का ज्ञान कराना।

2- विचारों को क्रमबद्धता से व्यक्त करने का विकास करना।

3- वाचन को प्रभावोत्पादक बनाने का विकास करना।

4- पढ़ने की आदत डालना।

5- भावाभिव्यक्ति का विकास करना।

6- बोधशक्ति का विकास करना।

7- सौन्दर्यबोध को बढ़ाना।

8- विद्यार्थियों में स्वाध्याय की प्रवृत्ति का विकास करना।

माध्यमिक स्तर पर हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्य –

1- पाठनकला में निपुणता का विकास करना।

2- सभी रसों एवं भावों को समझना , ग्रहण करने की क्षमता का विकास।

3- उचित गति से लिखने का अभ्यास की क्षमता का विकास।

4- शब्द एवं सूक्ति भण्डार में वृद्धि करना।

5- निबंध , संवाद ,सारांश , पत्र लेखन आदि लिखने की दक्षता का विकास करना।

6- विद्यार्थियों मे अभिनय , अनुकरण एवं संवाद की योग्यता का विकास करना।

7- मौन वाचन की आदत का विकास करना।

8- मौन वाचन के साथ तथ्यों को ग्रहण करने का विकास।

उच्चत्तर माध्यमिक स्तर पर हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्य –

1- भाषा को अधिक से अधिक पढ़ने के लिये प्रेरित करना।

2- कविता , निबंध लेखन के लिये प्रोत्साहित करना।

3- साहित्य बोध एवं भाव ग्रहण करने की क्षमता का विकास करना।

4- पाठ्यक्रम की विविधता को समझने की योग्यता का विकास करना।

5- अन्य विषयों को समझने की क्षमता का विकास करना।

6- चिन्तनशीलता का विकास करना।

7- शैलियों एवं साहित्य की विधाओं के ज्ञान का विकास करना।

भाषा एक कौशल

भाषा भावों विचारों तथा तथ्यों की अभिव्यक्ति का एक साधन तथा माध्यम है। भाषा के तीन प्रमुख घटक है।

1- भाषा विज्ञान

2- व्याकरण

3- भाषायी कौशल

(1) भाषा विज्ञान – इसके अंतर्गत अर्थ विज्ञान , वाक्य विज्ञान , लिपि विज्ञान , ध्वनि विज्ञान , शब्द विज्ञान सम्मिलित हैं। ये भाषा के सैद्धांतिक पक्ष है।

(2) व्याकरण – व्याकरण में भाषा के सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक दोनो पक्ष होते हैं। व्याकरण भाषा का नियंत्रक है।

(3) भाषा कौशल – यह भाषा का व्यवहारिक पक्ष है तथ्यों विचारों की अभिव्यक्ति तथा कौशल में शारीरिक अंगो , ज्ञानेन्द्रियो , कर्मेन्द्रियों को क्रियाशील रहना पड़ता है।

कौशल का अर्थ – क्रियाओं के विशिष्ट समूह को कौशल कहते हैं।

भाषा एक कौशल – व्यक्ति की सम्प्रेक्षण क्षमता भाषा कौशलों की दक्षता पर निर्भर करती है। जिन भावों व विचारों की अभिव्यक्ति करना चाहते हैं , उन्हे कितनी क्षमता से बोधगम्य कराते हैं यह भाषा कौशल के उपयोग पर निर्भर करता है।

भाषायी कौशलों की विशेषतायें –

1- भाषा कौशल भाषा का व्यवहारिक रूप है।

2- भाषा कौशल संप्रेक्षण का मुख्य माध्यम है।

3- भाषा कौशल सभी अंग क्रियाशील होते है

4- भाषा कौशल अर्जित होता है।

5- भाषा कौशल के दो घटक 1. पाठ्य वस्तु 2. अभिव्यक्ति।

6- भाषा कौशल के दो प्रवाह 1. लिखना पढ़ना 2. बोलना सुनना।

7- भाषा कौशल का उद्देश्य बोधगम्यता है।

8- भाषा कौशल मे शाब्दिक अन्तः क्रिया होती है।

भाषा कौशल के मुख्य चार रूप है – सुनना , बोलना , पढ़ना , लिखना

श्रवण कौशल – वाचन सुनने और सुनकर अर्थ एवं भाव को समझने की क्रिया को श्रवण कौशल कहते है। श्रवण कौशल ध्वनि विज्ञान के अंतर्गत आता है।

श्रवण कौशल के गुण –

1- सुनने वाले की श्रवण इन्द्रिय सामान्य एवं क्रियाशील होनी चाहिये।

2- भाषा कीध्वनियों से शब्द का बोध होना चाहिये।

3- सुनने वाला ध्वनियों के प्रति सजग हो और उसे समझने का प्रयास करना चाहिये।

4- सुनने के प्रति तत्परता , रूचि एवं एकाग्रता होनी चाहियें

5- ध्वनियों से जो भाव व विचार सम्प्रेषित किये जा रहे हैं उन्हें बोधगम्य होना चाहिये।

6- ध्वनियों के साथ बोलने वाले के हाव भाव से भी उसकी अभिव्यक्ति का अनुमान लगाना चाहिये।

श्रवण कौशल के दोष –

1- अशान्तवातावरण

2- श्रवणेन्द्रिय विकार

3- पढ़ने मे अरूचि

4- ध्यान केन्द्रित न होना

5- मौखिक कार्य का अभाव

6- शिक्षकों मे रूचि का अभाव

7- पाठ्य वस्तु की विलक्षणता

8- एक साथ दो काम

9- कक्षा में कठोर नियंत्रण

विकास के उपाय – श्रवण कौशल के लिये दृश्य श्रव्य सामाग्री का प्रयोग जैसे – रेडियो , टेपरिकार्डर , सिनेमा टेलीवीजन , वीडियो आदि का प्रयोग करना।

वाचन कौशल – कैथरीन ओकानर के अनुसार वाचन वह जटिल सीखने की प्रक्रिया है जिसमे सुनने की गतिवाही माध्यमों का मानसिक पक्षों से संबंध होता है।

वाचन कौशल का गुण –

1 प्रत्येक अक्षर शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण होना चाहिये।

2 प्रत्येक शब्द को अन्य शब्दों से अलग करके उचित लय या विराम के साथ पढ़ना।

3 वाचन मे सुन्दरता के साथ प्रवाह बनाए रखना।

4 आवश्यकतानुसार उचित हाव भाव का होना या समान गति से पढ़ना।

5 मधुरता , प्रभावोत्पादकता तथा चमत्कार पूर्ण ढंग से उतार चढ़ाव के साथ वाचन होना चाहिये।

वाचन का आधार – 1. वाचन मुद्रा 2. वाचन शैली

वाचन शिक्षण कौशल –

वाचन की विशेषता – 1. प्रभावोत्पादक 2. उचितबल विराम के साथ पढ़ना 3. भाव भंगिमाओं का प्रदर्शन 4. सुस्वरता के साथ प्रवाह बनना।

डॉ.पाण्डेय के अनुसार – वाचन वह क्रिया है जिसमें प्रतीक ध्वनि व अर्थ साथ साथ चलते है।

वाचन शिक्षण के उद्देश्य – 1 शुद्ध उच्चारण 2. भावों के अनुकूल लोच 3. मुग्ध करना 4. भाव ग्रहण 5. बोधगम्यता।

वाचन के प्रकार –

वाचन

सस्वर वाचन | मौन वाचन/स्वाध्याय

आदर्श वाचन | अनुकरण वाचन | स्वाध्याय | द्रुतवाचन | गम्भीर वाचन

शिक्षक द्वारा छात्र द्वारा

वैयक्तिक समूह मे

भाषा पर अधिकार विषय पर अधिकार केन्द्रीय भाव की खोज नवीन सूचना एकत्रीकरण

सीखी गई भाषा का अभ्यास अवकाश का सदुपयोग साहित्य का परिचय आनन्द की प्राप्ति

पठन कौशल – लिखित भाषा को पढ़ने की किया की पठन कौशल कहा जााता है जैसे – पुस्तकों का पढ़ना , सामाचार पत्रों को पढ़ना आदि। भाषा के संदर्भ मे पढ़ने का अर्थ कुछ भिन्न होता है। भाव व विचारों को लिखित भाषा के माध्यम से अभिव्यक्ति को पढ़ कर समझना पठन कहा जाता है।

पठन दो प्रकार से किया जाता है –

मौखिक रूप से पठन

1 व्यक्तिगत पठन

2 सामूहिक पठन

3 आदर्श पठन

4 अनुकरण

मौन रूप से पठन

1 मौन

पठन के आवश्यक कारक

1- पठन में दृश्य इन्द्रिय सामान्य तथा कियाशील होना चाहिये।
2- लिखित भाषा लिपि का ज्ञान होना चाहिये।
3- लिखित पाठ्य सामाग्री का ज्ञान एवं शुद्ध उच्चारण का अभ्यास होना चाहिये।
4- पठन मे रूचि एकाग्रता तथा तत्परता होनी चाहिये।
5- वाक्य विज्ञान रूप विज्ञान एवं अर्थ विज्ञान का ज्ञान होना चाहिये।

पठन कौशल का विकास –

1- रूचि के अनुरूप साहित्य पढ़ने को देना।
2- पढ़ने का अभ्यास कराया जाय।
3- अवस्थानुरुप आवश्यकता एवं इच्छाओं के अनुरूप पठन के लिये अवसर दिया जाय।

लेखन कौशल –

This is not registered version of TotalDocConverter

भाषा के दो रूप होते हैं – लिखित , मौखिक । भावों का प्रकट करने के लिये ध्वन्यात्मक संकेतों का प्रयोग मौखिक भाषा है तथा यही भाषा लिपिबद्ध कर दी जाय तो लिखित भाषा के रूप मे बदल जाती है। देवनागरी लिपि की शिक्षा आवश्यक है। '' भाषा की ध्वनियॉ को लिपिबद्ध करना ही लिखना है।

लिखित अभिवयक्ति के उद्‌देश्य –

पढ़ा +